भारत स्वातन्त्र्य स्वर्ण-जयन्ती ग्रन्थमाला-10

संस्कृत के गौरव शिक्षक

कलानाथ शास्त्री

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

भारत स्वातन्त्र्य स्वर्ण-जयन्ती ग्रन्थमाला-10

संस्कृत के गौरव-शिखर

कलानाथ शास्त्री

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
1998

विषय-वस्तु

पुरोवाक्	iii-iv
प्रस्तावना	v-vi
राष्ट्रीय आन्दोलन और संस्कृत	**१-४२**
१. संस्कृत साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम	३-८
२. संस्कृत की प्रेरक भूमिका	९-१६
३. राष्ट्र और राष्ट्रीयता की भावना	१७-२१
४. स्वदेश के प्रति निष्ठा	२२-२६
५. राष्ट्रीय एकता का मूलाधार : संस्कृत भाषा	२७-३५
६. प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक मूल्य	३६-४२
साहित्य के उत्कृष्ट प्रतिमान	**४३-८६**
७. चरित्र के उच्चतम आदर्श रघु	४५-४९
८. संस्कृत नाटकों में विलक्षण रामकथा योजनाएं	५०-५६
९. शौर्य और प्रविधि-ज्ञान के प्रतीक : अर्जुन	५७-६४
१०. कालिदास के क्रान्तिकारी आयाम	६५-६९
११. कालिदास समीक्षा का इतिहास	७०-७८
१२. संस्कृत में उत्कृष्ट ऋतु वर्णन : वसन्त	७९-८५

उत्तररामचरित में राम लोकमत का आदर करके सीता को वन में भेज तो देते हैं पर चिरसहचरी के वियोग से उनका प्रौढ़ हृदय उस भीगी हुई उम्र में बिलकुल बैठ जाता है। वे अन्दर ही अन्दर घुलते हैं।

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।।

पंचवटी को देखते ही उन्हें सीता के साथ बिताये एक-एक दिन की स्मृति हो जाती है और वे विह्वल हो जाते हैं। राजा के कर्तव्य और एक प्रेमी पति के दाम्पत्यस्नेह के बीच का द्वन्द्व राम को कचोटता रहता है। वे कहते हैं :-

यथा तिरश्चीनमलातशल्यं प्रत्युप्तवन्तः सविषश्च दन्तः।
तथा हि तीव्रो हृदि शोकशङ्कुर्मर्माणि कृन्तन्नपि किं न सोढः।।

जैसे कोई विषैला कांटा गड़कर निकल जाता है और उसकी टीस सालती रहती है, उसी तरह बचपन से लेकर विपत्तियों तक में सदा साथ निभाने वाली सीता के वियोग की टीस हमेशा मुझें कचोटती रहती है ओर मुझे चुपचाप उसे सहना पड़ता है।

लोकमत के अनुरोध से राम यह सब सहते हैं और जब लव के द्वारा जृम्भोकास्त्र के प्रयोग को देखकर समस्त जनता को यह पूर्णतः विश्वास हो जाता है कि लव और कुश राम के ही सुपुत्र हैं और जब वाल्मीकि आदि मुनि और गंगा, पृथ्वी आदि देवियां सीता को पूर्णतः पवित्र घोषित करती हैं तब राम लोकमत के अनुरोध पर ही सीता को स्वीकारते हैं जब देवियां घोषित करती हैं:-

जगन्मङ्गलमात्मानं कथं त्वमवमन्यसे।
आवयोरपि यत् सङ्गत् पवित्रत्वं प्रकृष्यते।।

लक्ष्मण कहते हैं- आर्य, श्रूयताम्। सुनिये सीता की पवित्रता घोषित की जा रही है तो राम कहते हैं- सुनिये सीता की पवित्रता घोषित की जा रही है- तो राम कहते है- **लोकः शृणोतु**। जनता ही सुनेगी। मैं तो यह स्वयं जानता हूँ।

इस नाटक में प्रारंभ से लेकर अन्त तक करुणा का जो सागर लहराता है उसे देखकर ही कहा गया है-

अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।

भवभूति ने राम में एक सच्चे स्नेही पति का ऐसा अनूठा चित्र खींच दिया है जिसकी मिसाल विश्व-साहित्य में मिलना कठिन है।

योऽनूचानः स नो महान्।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान

56-57 इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी

नई दिल्ली 110 058